DELHIIN/2007/20081 Date of Publication: 13/11/2019 G-3/DL(N)/202/2019-21

# अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–13 अंक–6 नवम्बर 2019 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

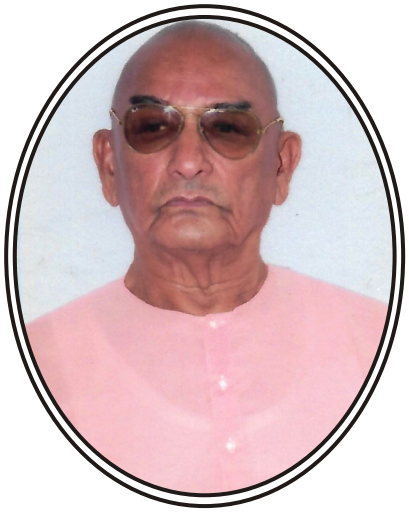

## तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानंद जी

संस्थापकः

## आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल (रजि. सं. S/20762)

सत्संग भवन – सी॰एस॰/ओ॰सी॰एफ॰ नं॰ 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85
मो॰ : 9810344596, 011–27574151
ई–मेलः atmagyanp@gmail.co,
वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.org

**सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह**
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

**इस अंक में प्रकाशितः–**

1. त्याग एवं बलिदान करने वाले साधक ही आत्मिक आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं।
2. सच्चे सन्त की महानता को सामान्य व्यक्ति समझ नहीं पाता है।
3. मन को वश में करने वाला साधक ही जीवन मुक्त हो सकता है।
4. अध्यात्म विद्या से ही हम स्वयं को जानने में समर्थ हो पाते हैं।
5. सभी प्रेमियों के लिए तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी का "अध्यात्म सन्देश"।
6. अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

**महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः**

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग–1)

**महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः**

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

**सत्संग कार्यक्रमः–** चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

**संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.org है**

रुहानी गुरू आनन्द के दाता शाश्वत् दण्डवत् प्रणाम!!!

सम्पादकीय

# त्याग एवं बलिदान करने वाले साधक ही आत्मिक आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

आज मानव की समस्त भाग दौड़ बाहर ही सब कुछ पाने के लिए हो रही है परन्तु जिसे पाने के लिए यह मनुष्य शरीर मिला है वह बाहर नहीं बल्कि हमारे अन्दर ही विद्यमान है आज के मानव की स्थिति कस्तूरी के मृग की तरह हो गयी है, जैसे कस्तूरी का मृग सुगन्ध की तलाश में वन–वन भटकता फिरता है जबकि वह सुगन्ध उसके अन्दर से ही आती है। वैसे ही हम शान्ति की खोज में बाहर संसार में भटकते फिर रहे हैं परन्तु वह शान्ति का स्रोत तो हमारे अन्दर ही विद्यमान है। हमारी अशान्ति का मुख्य कारण यह है कि हम अपना अस्तित्व केवल शरीर तक ही सीमित मानकर बैठ जाते हैं और उसके अन्दर उसे चलाने वाली आत्मा को भूला बैठते हैं जो सृष्टि के संचालन परमपिता परमात्मा का ही अंश है। यदि हमे इसका थोड़ा सा भी आभास होने लगे तो जीवन का उत्थान होने में तनिक भी देर नहीं लग सकती है। परन्तु मोह निशा में सोने वाले व्यक्ति को इसका आभास नहीं हो पाता है। मानव को मोह निशा से जगाने के लिए सच्चे सन्त इस धरा धाम पर आते हैं। वे समाज में फैले अज्ञान अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। वे समाज को समझाते हैं कि यह शरीर तो नश्वर है केवल आत्मा ही अजर अमर है इसलिए शरीर की छोटी–छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जीना कोई जीवन नहीं है इस शरीर का महत्व तो तभी है जब इसे परमात्मा के साधन भजन में लगाया जाये। जब मानव को यह भान हो जायेगा कि मैं शरीर नहीं बल्कि परमात्मा का अंशी आत्मा हूँ। तब उसके अन्दर से मोह और लोभ उसी तरह विदा हो जायेंगे जैसे सूर्य के उगते ही अन्धेरा दूर भाग जाता है। तब वह शरीर के सुख साधनों की चिंता छोड़कर आत्मिक उन्नति के लिए प्रयास करने लगता है। आत्मिक उन्नति का कार्य कमजोर मनोदशा वाला व्यक्ति कभी नहीं कर सकता है इस कार्य को तो कोई त्याग एवं बलिदान करने वाला व्यक्ति ही कर सकता है। मानव की तृष्णाएँ सर्वस्व लुटा देने पर भी कभी शान्त नहीं होती है बल्कि ये मन को और ज्यादा आतुर एवं अशान्त बना देती है इसलिए शान्ति एवं आनन्द के मार्ग को छोड़कर इनके पीछे दौड़ना मूर्खता है। समझदार व्यक्ति तो वह है जो इस मनुष्य जीवन को परमात्मा द्वारा दिया गया परम उपहार समझ कर इसकी समस्त शक्तियों का उपयोग परमात्मा की प्रत्यक्ष अनुभूति आत्मा के लिए करता है। मर्यादापूर्ण आचरण करने से ही मानव पूर्णता को प्राप्त करता है। शरीर को ही प्राथमिकता देने वाले जो मनुष्य इसकी ही सुख सुविधाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करना जीवन का उद्देश्य मान बैठते हैं वे आत्मिक आनन्द को कभी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। परन्तु जो स्वयं त्याग एवं बलिदान करने को तत्पर रहते हैं वे अपने जीवन को इसके परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए स्वाहा कर देते हैं मानव जीवन की इससे श्रेष्ठ परिणति अन्य कोई नहीं हो सकती है। आत्मिक विकास होने पर ही परमानन्द की प्राप्ती सम्भव है।

# सच्चे सन्त की महानता को सामान्य व्यक्ति समझ नहीं पाता है।

सन्त समागम के समान इस सृष्टि में अन्य कोई सुख नहीं है। सन्त की पहुँच परमात्मा तक भी होती है और सामान्य समाज तक भी होती है। वे समाज में सत्संग के माध्यम से परमात्मा की अमृत खुशबु को फैलाते हैं और मानव की ज्ञान के प्रति जिज्ञासा प्रबल करते हैं। सन्त समागम सबसे उत्तम तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान करने से मन का मैल धुलता है उसके विचारों में परिवर्तन आ जाता है तथा उसकी नकारात्मक सोच सकारात्मक हो जाती है। सन्त बादल के समान परमार्थी होते हैं जैसे बादल समुद्र के खारे जल को छान कर पृथ्वी पर मीठे जल की वर्षा करता है। उस वर्षा से पृथ्वी की तपन बुझाकर चारों तरफ हरियाली छा जाती है सभी पेड़–पौधे हरे भरे दिखायी देने लगते हैं उसी प्रकार सच्चे सन्त समाज में अपने परिश्रम से सत्संग वर्षा करते हैं जिससे सत्संग सुनने वालों में खुशहाली छा जाती है और वे परमात्मा के ज्ञान को जानने के लिए लालायित हो जाते हैं। इसी लिए कहा गया है कि –

**सन्त बड़े परमार्थी ज्यों घन बरसे आय।**
**तपन बुझावे ओरन की, अपना पारस लाय।।**

सन्त समाज में अज्ञान अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं जिससे मानव का अज्ञानमय जीवन ज्ञान प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है। सन्त मोह निद्रा में सोये मानव को ज्ञान से जगा देते हैं। मानव की दृष्टि खोलकर उसे परमात्मा के परम प्रकाश के दर्शन करा देते हैं। इस प्रकार मानव का कल्याण करने वाला सन्त के अलावा अन्य कोई नहीं हो सकता है। इस संसार में सकल पदार्थ परमात्मा ने उत्पन्न किये हैं उनमें से एक अमृत भी है जिसका पान करने से मानव का मृत्यु रोग समाप्त हो जाता है और वह काल पर विजय प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार मानव का सन्त से बड़ा हितैषी इस दुनिया में अन्य कोई नहीं हो सकता है। सन्त मानव के जीवन का तार परमात्मा से जोड़ देते हैं जिससे उसके अन्दर ब्रह्म सूर्य का उदय हो जाता है। उसके प्रकाश से मानव का मोह अन्धकार दूर हो जाता है उसे अपने सच्चे घर वापस जाने की लगन लग जाती है। वह गुरू ज्ञान से अपने सकामी जीवन को निष्कामी बनाने लगता है। जब जीवन निष्कामी हो जाता है तो जीव ब्रह्म का मेल होते देर नहीं लगती है। इसीलिए कहा गया है कि–

**सन्त मिले तो मैं मिल जाऊँ, सन्त न मो से न्यारे।**
**बिन सत्संग के कोई न पावे, कोटि यतन कर हारे।।**

आज के युग में सच्चे सन्त की पहचान करना भी मुश्किल हो गया है। आज लाल कपड़े पहने हज़ारों लाखों लोग मिल जायेंगे परन्तु वे सभी सन्त नहीं हो सकते, क्योंकि सन्त

की पहचान कपड़ों से नहीं बल्कि ज्ञान से होती है। इसीलिए कहा गया है कि–

**वेष देख मत भूलिये, पूछ लीजिये ज्ञान।**
**मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।**

सभी सन्तों को शब्द का ज्ञान नहीं होता है इसलिए सभी सन्त नहीं होते जो व्यक्ति सन्त की पहचान कर सकता है वही वास्तव में समझदार होता है क्योंकि हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है। सामान्य व्यक्ति सन्त की महानता को नहीं समझ पाता है। इसीलिए कहा गया है कि –

**हीरा परखे जौहरी, शब्द को परखे साध।**
**जो कोई परखे साधु को, ताका मता अगाध।।**

मानव को आत्म ज्ञान मिल जाना मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है यह आत्मज्ञान सच्चे सन्त से प्राप्त होता है। सच्चे सन्त त्रिकाल दर्शी होते हैंउनकी पहुँच परमात्मा तक होती है अतः वे जीव को ब्रह्म से मिलाने में समर्थ होते हैं। आज के युग में इस आत्म ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध मोक्ष प्राप्त किये सन्त तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी चेतन योग आश्रम सैक्टर–11, रोहिणी दिल्ली में करा रहे हैं। यह मानव जीवन बड़ा अनमोल इस जीवन में ही आत्म ज्ञान प्राप्त कर साधन सेवा के द्वारा परमात्मा से मिला जा सकता है अन्य किसी जन्म में नहीं। सभी प्रेमियों को महात्मा जी की आज्ञा एवं सेवा शिरोधार्य करनी चाहिए।

## भजन

करूं सेवा मैं तुम्हारी, तत्वदर्शी सन्त कहाने वाले।
निगुर्ण ब्रह्म को घट में, साकार दिखाने वाले।।
सन्त सत्संग मेला लाये, हम सत्संग सुनने आये।
गुरूवर से मेल मिलाये, मेरे सौभाग्य को जगाये।।
तुम हो तत्वदर्शी सन्त, सौभाग्य जगाने वाले। करूं सेवा.....
सन्त बादल बन कर आये, एक अमृत वर्षा लाये।
सेवक के जीवन के अन्दर बूँद–बूँद बरसाये।
तुम हो तत्वदर्शी सन्त, अमृत को पिलाने वाले। करूं सेवा....
सन्त सूरज बन कर आये, तुम ज्ञान उजाला लाये।
दिव्य दृष्टि खोल सेवक की, आत्म रूप दिखाये।।
तुम हो तत्वदर्शी सन्त, आत्मरूप दिखाने वाले। करूं सेवा....
सन्त चेतन वाणी सुन लो, तुम साधन सेवा करलो।
मानव अपने इस जीवन में, गुरू का दर्शन करलो।।
तुम हो तत्वदर्शी सन्त, गुरू दर्शन कराने वाले। करूं सेवा....

# मन को वश में करने वाला साधक ही जीवन मुक्त हो सकता है।

इस सृष्टि में पाये जाने वाले सभी जीव प्राणियों की तुलना में मनुष्य सबसे ज्यादा समझदार एवं शक्ति सम्पन्न है। भले ही वह शारीरिक शक्ति में कुछ पशुओं से कम हो परन्तु बुद्धिबल व आत्मिक बल में मनुष्य से ज्यादा शक्तिशाली प्राणी इस सृष्टि में दूसरा नहीं है। इतना शक्ति सम्पन्न होते हुए भी अधिकांश मनुष्य अपने जीवन में दुखी, परेशान एवं असहाय दिखायी देते हैं। इसका कारण यह है कि उन्हें अपनी शक्ति की पहचान नहीं है। मनुष्य को अपनी शक्ति का सही लाभ उठाने के लिए परमात्मा ने अनेक अवसर उसे दिये हैं परन्तु हम में से अधिकांश मनुष्य उसका समुचित लाभ नहीं उठा पाते हैं। ज्यादातर मनुष्य अपने अन्दर की शक्तियों को बेकार के उद्देश्यों की पूर्ति करने में लगा देते हैं। जिनका परिणाम कुछ भी नहीं निकलता है उनसे न तो कोई लौकिक लाभ मिल पाता है और न ही आत्मिक उन्नति। इसका मुख्य कारण यह है कि हम अपने जीवन के सही लक्ष्य को नहीं समझ पाते हैं और उसे निर्धारित भी नहीं कर पाते हैं। सही लक्ष्य का पता न होने से हम उन शक्तियों का क्षरण दुर्व्यसनों में करने लगते हैं। उससे हमारी शक्तियाँ अधोमुखी हो जाती हैं। यदि हम अपने अन्दर की शक्तियों को अन्दर की ओर नहीं मोड़ पाते हैं तो वे अनियंत्रित होकर हमारे विनाश में जुड़ जाती हैं। अतः समय रहते हुए मनुष्य को सन्त शरण में जाकर सत्संग के माध्यम से अपने अन्दर छिपी उन शक्तियों का पता करना चाहिए और उन्हें अन्दर की ओर मोड़ने का प्रयास करना चाहिए। सन्तों ने इनका एक मात्र उपाय संयम बताया है उन्होंने संयम को बड़ा महत्व दिया है। संयम न होने से ही हमारी शक्तियों का दुरूपयोग होने लगता है। शक्तियों के इस दुरूपयोग का कारण केवल हमारी इन्द्रियाँ ही नहीं बल्कि मन है क्योंकि इन्द्रियाँ तो केवल बाहर ही दिखायी देती हैं जबकि इनकी मूल जड़े हमारे मन के एवं हमारे विचारों के भीतर होती हैं वहीं से जन्म लेने वाली कामना, वासना एवं विषय भोगों की लालसा इन्द्रियों को उस दौड़ में लगा देती है जिससे शक्तियों के संचय के स्थान पर उनका क्षरण आरंभ हो जाता है। मन की प्रेरणा से ही बाहर की इन्द्रियाँ असहाय होकर भोग के पथ पर चल पड़ती है प्रायः ऐसा देखा जाता है कि शारीरिक रोग होने पर भी मन उन पदार्थों को खाने के लिए भी लालायित हो जाता है जिनसे रोग को समाप्त करने के लिए परहेज की आवश्यकता होती है। इसी तरह मन के आवेश में आकर हम शरीर की विभिन्न इन्द्रियों से अपनी शक्तियों का क्षरण करते रहते हैं। इसलिए शक्ति का संचय करने के लिए इन्द्रियों का संयम सबसे महत्वपूर्ण बताया है। मानव संयमित एवं अनुशासित होकर ही आत्मिक उन्नति की ओर बढ़ सकता है इसलिए सन्तों के द्वारा मानव को यह सलाह दी गयी है कि इन्द्रियों को प्रेरित करने वाले इस मन को बार–बार इन्द्रियों के

विषय से हटाकर अपने वश में करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि विषय भोग विष के समान होता है। विष को खाने से वो मनुष्य एक बार ही मरता है जबकि विषय भोगों की लालसा में मनुष्य को बार–बार मरना पड़ता है। अतः कहा गया है कि मन ही मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र होता है एवं मन ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु होता है। मन यदि वश में हो जाये तो मानव जीवन मुक्त हो सकता है और यदि मन वश में न हुआ तो मानव हमेशा बन्धन में ही बंधा रहता है इसे बार–बार जन्मना और मरना पड़ता है जो सबसे बड़ा दुख है। यद्यपि मन को वश में करना कोई सरल कार्य नहीं है इसे वश में करना कठिन कार्य है परन्तु असम्भव नहीं है। मन को वश में करना जीवन की सुख–शान्ति के लिए बड़ा महत्वपूर्ण है। मन का स्वभाव चंचल एवं मायावी है क्योंकि यह प्रकृति अर्थात् माया का अंशी है। इसकी चंचलता अचल ब्रह्म के साथ जुड़ने पर ही समाप्त हो सकती है और माया पति के सम्पर्क में आने पर ही माया का परदा समाप्त होता है अतः मन को अपने स्वर में होने वाले शब्द ब्रह्म के साथ निरन्तर जोड़ने का अभ्यास करना चाहिए। हमें अपनी क्षुद्र भावनाओं को छोड़कर यथा शीघ्र सन्त शरण में जाकर सत्संग श्रवण करना चाहिए तथा ज्ञान प्राप्त कर साधना एवं सेवा में लग जाना चाहिए। साधना की विधियों के द्वारा निरन्तर मन को परमात्मा के साथ जोड़ने का अभ्यास ही मन को वश में करने के का एक मात्र उपाय है। मन को वश में करने का कार्य एक दिन में सम्भव नहीं है इसे साधक को हिम्मत न हारते हुए सच्चा सेवक बनकर जीवन पर्यन्त साधना में लगा रहना चाहिए त्यागी बलिदानी एवं साहसी साधक ही साधना में सफल होते हैं। ऐसे साधकों पर गुरू की कृपा अवश्य ही बरसती है और एक दिन सच्चा साधक मन पर विजय पाकर जीवन मुक्त अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

## भजन

चंचल मन को वश में करता कोई सन्त सुजान।
निष्कपट सेवक ही पाता है निस्वार्थ गुरू का ज्ञान।।
अनहद गरजे, बिजली चमके करता अमृत पान।
साधन, सेवा, सुमरन से, तू कर अपनी पहचान।।
गुरू सेवा में समर्पित हो जा, तजकर सब अभिमान।
जीवन मुक्त बनाना है तो, गुरू आज्ञा को मान।।
मानुष जीवन सफल बना लो, जान ले आत्म ज्ञान।
चेतन योगी गुरू कृपा से, पाया पद निर्वाण।।

# अध्यात्म विद्या से ही हम स्वयं को जानने में समर्थ हो पाते हैं।

आज का मानव शिक्षित होने पर भी सत्य के पथ को अपनाने में असमर्थ है इसका कारण यह है कि उसने अध्यात्म विद्या को नहीं जाना है जो समस्त विद्याओं की राजविद्या है इस विद्या से मानव में सत्य–असत्य का निर्णय करने की क्षमता आती है इससे अमृत की प्राप्ती होती है। जिससे मानव मृत्यु–रोग को समाप्त कर अमरता को प्राप्त होता है। इस विद्या को जानकर मानव हंस के समान गुण ग्राही हो जाता है। जैसे हंस कीड़े–मकोड़े नहीं खाता है बल्कि मोती चुगता है तथा उसमें नीर–क्षीर विवेक होता है अर्थात् वह दूध और पानी को अलग–अलग कर देता है उसी प्रकार अध्यात्म विद्या से मानव में विवेक जाग्रत हो जाता है इसलिए वह संसारिक आकर्षणों में न फंसकर आत्मिक उन्नति के मार्ग पर चल पड़ता है। वह क्या उचित है? क्या अनुचित है इसका निर्णय करने में भी समर्थ हो जाता है। इस अध्यात्म विद्या का बोध तत्वदर्शी संत की शरण में जाने पर ही होता है। अध्यात्म विद्या ज्ञान का भण्डार है। ज्ञान का अर्थ संसारी जानकारियाँ प्राप्त करना नहीं है बल्कि आत्म बोध है अर्थात् स्वयं को जानना है जिसके लिए वह अपने अन्दर छिपी विशेषताओं को समझकर अपनी चित्त की वृत्तियों का निरोध करने में लग जाता है क्योंकि चित्त की कलुषित वृत्तियों को मिटाकर ही हम अन्दर से पवित्र हो सकते है तभी हमें अपना सच्चा स्वरूप दिखायी दे सकता है। जैसे हम वृक्ष के पत्ते शाखा फूल और फल को ही बाहर देख पाते हैं परन्तु उसका मूल अर्थात् जड़े हमें दिखायी नहीं देती है जिसके द्वारा ये सभी खुराक पाकर हरे–भरे एवं विकसित होते दिखायी देते हैं उसी प्रकार हमें यह शरीर एवं उसकी इन्द्रियाँ तो दिखायी देती हैं परन्तु इन सबका संचालन करने वाली आत्मा दिखायी नहीं देती है। यह अध्यात्म विद्या इसी का बोध कराने वाली विद्या है। इसे जानकर ही वह अमरता को प्राप्त होता है। यह विद्या बाहर से नहीं सीखी जाती है। बल्कि यह तो अपने अन्दर से ही उपजती है। जब हम अपने अन्दर छिपी शक्ति की पहचान कर लेते हैं तब हम संसारी आकर्षण में न फंसकर परम शक्ति परमात्मा की तरफ उन्मुख हो जाते हैं और हमारा दृष्टिकोण पूरी तरह से बदल जाता है तब हम बाहर से आँखें बन्द

करके अपने अन्दर स्वयं की खोज में लग जाते हैं। जब हम वास्तविकता को समझ लेते हैं तब हम भव–बन्धनों से मुक्त होने के लिए जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ती के लिए प्रयासरत्त हो जाते हैं। जिसके लिए हमें यह मनुष्य जन्म मिला है मोक्ष के लिए मानव को मरने का इन्तजार नहीं करना पड़ता है यह तो जीते जी में ही परम आनन्द एवं परम शान्ति की अवस्था है। यह सभी प्रकार की तृष्णा एवं वासना से मुक्त होने की अवस्था है। यह चित्त के परिष्कार की पराकाष्ठा है अर्थात् अपने स्वरूप में पहुँचने की अवस्था है। इसे प्राप्त करने के बाद जीवन में अन्य कुछ पाना शेष नहीं रहता है। यह पूर्ण संतुष्टि एवं पूर्ण शान्ति की अवस्था है इसे प्राप्त करने पर मनुष्य का जीवन धन्य हो जाता है। आज के युग में तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतना नन्द जी ने जीते जी में मोक्ष को प्राप्त किया है। जो भी जिज्ञासु श्रद्धा एवं विश्वास से उनकी शरण में आता हैं उसे वे ज्ञान उपदेश कर साधना के माध्यम से मोक्ष के मार्ग पर बढ़ने के लिए निरन्तर प्रेरित कर रहे हैं।

## भजन

अध्यात्म विद्या का बोध कराने सन्त जगत में आते हैं।
सेवक के जीवन के अन्दर, एक नयी क्रान्ति लाते हैं।।
जो जिज्ञासु सन्त शरण में, बड़ी श्रद्धा से आते हैं।
वो अध्यात्म विद्या को पाकर, अपना सौभाग्य बनाते हैं।।
अध्यात्म ज्ञान को पाकर जो, साधन को अपनाते हैं।
वो साधक अपने जीवन में, प्रेम खजाना पाते हैं।।
साधन करके अपने अन्दर, जो अमृत तत्व को पाते हैं।
मृत्यु रोग मिटाकर वे, अमर लोक को जाते हैं।।
सन्त चेतन सबको सत्संग देकर, ब्रह्म से मेल कराते हैं।
चेतन वाणी सुनों रे प्राणी, जीवन सफल बनाते हैं।।

# सभी प्रेमियों के लिए तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी का

# 'अध्यात्म सन्देश'

मैं समय–समय पर सभी प्रेमियों को बताता रहा हूँ कि मेरे गुरू शरीरी गुरू नहीं हैं बल्कि मेरे गुरू अविनाशी परमात्मा हैं जो मेरे अन्दर प्रकट रूप में हैं अविनाशी गुरू ही मुझे अन्दर से सभी कार्यों के लिए इशारा करते हैं क्योंकि मेरे बाहरी नेत्र नहीं इसलिए यहाँ मेरे द्वारा होने वाले सभी कार्यों को गुरू ही सम्भालते हैं, मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ। सारे कनैक्शन उन्हीं के हाथ में हैं मैं तो केवल उनकी कठपुतली मात्र हूँ। इस समय जो कुछ हो रहा है वह युग का परिवर्तन हो रहा है। यह कलियुग काला युग है। इसका प्रभाव अधिकांश लोगों पर पड़ रहा है इस समय में कोई भी व्यक्ति अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं है। हमारे जमाने के लोग सन्तों का सत्संग बड़ी श्रद्धा से सुनते थे और उनका बहुत आदर करते थे। परन्तु आज के समय में सच्चे सन्त का सत्संग सुनना भी लोग पसन्द नहीं करते हैं ज्ञान प्राप्त करना दूर की बात है। मैं आप सभी प्रेमियों को सम्बोधित कर रहा हूँ जिन्हें यह अध्यात्म ज्ञान मिला है उन्हें विषय वासनाओं से दूर रहकर ज्यादा समय साधना में देना चाहिए। प्रत्येक प्रेमी को प्रातः 3 बजे उठकर साधना अवश्य करनी चाहिए। सोने में अधिक समय नहीं लगाना चाहिए। जो आदमी योग साधना अधिक करता है उसकी नींद स्वतः ही कम हो जाती है। योग साधन करने से लोभ मोह आदि अन्दर पनपने वाले निशाचर सभी मर जायेंगे। मेरे अन्दर तो एक भी निशाचर जीवित नहीं हैं। मेरी तो काल के साथ भी लड़ाई हुई जिसमें गुरू महाराज ने मेरी पूरी मदद की है। इस प्रकार योगी के सामने काल, यम, मृत्यु कोई भी मुकाबला नहीं कर सकते हैं। गुरू ने मुझे जीते जी में मोक्ष भी दे दिया है। मोक्ष का मतलब मोक्ष द्वार के अन्दर जाना है। वह द्वार त्रिकुटी के अन्दर है। जब मुझे मिला तो मैं त्रिकुटी के अन्दर प्रवेश कर गया। मैंने अपने आपको उसमें जाते हुए देखा है और मैं अब भी वहीं हूँ। मैं जो कुछ भी बता रहा हूँ वह सब सही है इसमें कुछ भी गलत नहीं है। मैं उसके अन्दर जाकर उतनी ही बात कर रहा हूँ बात करने में कोई फर्क नहीं है। ऐसा महात्मा सतयुग त्रेता एवं द्वापर में भी नहीं मिला होगा। राम एवं श्री कृष्ण को भी मोक्ष नहीं मिला जिनकी पूजा संसारी लोग करते हैं उनको भी परमात्मा गुरू नहीं मिले। मेरी ये बाते आप प्रेमी लोग तो मान भी लोगे परन्तु संसारी लोग उसे नहीं मानेंगे। जबकि मैं 100% सही बता रहा हूँ। इसमें तनिक भी गलत नहीं है श्री कृष्ण में केवल सिद्धियों का चमत्कार था ज्ञान का नहीं। ये सिद्धियों के चमत्कार किसी साधु के लक्षण नहीं हैं। योगी तो ब्रह्म चरित्र का पालन करता हुआ बहुत दूर तक पहुँच जाता है। आपने मेरा आचरण एवं चरित्र देखा है मेरे गुरू परमात्मा हैं वहाँ गलती नहीं हो सकती है गुरू ने मेरे जीवन को सहज एवं सरल बना दिया है। गुरू सेवक से प्रसन्न है क्योंकि सेवक उनकी मर्यादा का पूरी तरह से पालन कर रहा है। महात्मा ने अपने आपको कभी गुरू नहीं कहा। अन्दर की सभी इन्द्रियाँ उन्हीं के अनुसार कार्य कर रही हैं क्योंकि सभी कुछ उन्हीं के द्वारा हो रहा है। आप भी मेरी बातों को दृढ़ विश्वास के साथ स्वीकार करें।

# अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा तीन दिवसीय अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन उखलीना (मेरठ) केन्द्र की ओर से दिनांक 01–11–2019 से 03–11–2019 तक "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11, दिल्ली में संस्था के संस्थापक तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया। जिसमें कई प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से साधक एवं साधिकाएँ सम्मिलित हुए। जिन्हें महात्मा जी ने प्रतिदिन दो पारियों में 4 घण्टे साधना का अभ्यास कराया। उन्होंने शिविर में सत्संग प्रवचन करते हुए प्रेमियों को समझाया कि आज के मानव की समस्त भाग दौड़ बाहर संसार में ही सब कुछ पाने के लिए हो रही है परन्तु जिसे पाने के लिए यह मनुष्य शरीर मिला है वह बाहर नहीं बल्कि हमारे अन्दर ही विद्यमान है वह साधना, सेवा एवं सत्संग के माध्यम से प्रकट हो सकता है इसलिए मानव को अपना अधिकांश समय साधना में ही लगाना चाहिए साधना का उद्देश्य मन को अपने वश में करना है क्योंकि मन को वश में करने वाला साधक ही जीवन मुक्त हो सकता है यही मानव जीवन का परम लक्ष्य है साधना से सेवक पर गुरू कृपा अवश्य होती है इसलिए सेवक में गुरू भक्ति दृढ़ होनी चाहिए। महात्मा जी ने गुरू भक्ति के भजन सुना कर प्रेमियों को भाव विभोर कर दिया। प्रेमियों ने भी अपने विचार एवं अनुभव प्रकट किये। महिला प्रेमियों ने भी गुरू वन्दना एवं गुरू महिमा के भजन सुनाये। बड़े हर्ष के साथ दिनांक 4.11.19 को प्रातः साधना एवं प्रसाद वितरण के बाद साधना शिविर का समापन हुआ।

## पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका का अध्ययन मानव जीवन को अध्यात्म में प्रवेश दिलाने में बहुत सहायक है। अध्यात्म ज्ञान ही मानव जीवन की सफलता का मूल मन्त्र है।

**– प्रमोद कुमार (मु॰ नगर)**

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका के माध्यम से ज्ञात हुआ कि अध्यात्म ज्ञान ही मानव जीवन का मूल आधार है यह मानव जीवन को उज्जवल बनाने वाली पत्रिका है।

**– अशोक शर्मा जेवर (गौतम बुद्ध नगर)**

3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका अध्यात्म के जिज्ञासुओं को सत्य ज्ञान की जानकारी देने में समर्थ है जिसे पढ़कर मानव अध्यात्म में प्रवेश कर सकता है ज्ञान की आँख खुलने पर ही भौतिकता का प्रभाव कम हो जाता है।

**– सेवासिंह अवन्तिका (दिल्ली)**

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका के द्वारा शान्ति स्रोत अपने अन्दर ही खोजने की प्रेरणा मिलती है अध्यात्म ज्ञान के बिना परम शान्ति मिलना असम्भव है।

**– रामनाथ शर्मा, कल्याणपुर, मेरठ**

## आवश्यक सूचना

**संस्था के समस्त प्रेमियों को सूचित किया जाता है कि संस्था द्वारा आगामी शिविर (मु॰ नगर) केन्द्र की ओर से दिनांक 13.12.2019 से 15.12.2019 तक "चेतन योग आश्रम", सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली में सम्पन्न होगा। सभी प्रेमी साथियों सहित अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।**

आज्ञा से
तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी

G-3/DL(N)/202/2019-21

# अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा तीन दिवसीय अलौकिक अध्यात्म साधना शिविर का आयोजन उखलीना (मेरठ) केन्द्र की ओर से दिनांक 01–11–2019 से 03–11–2019 तक "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11, दिल्ली में संस्था के संस्थापक तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया। जिसमें कई प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से साधक एवं साधिकाएँ सम्मिलित हुए।

**प्रकाशक, मुद्रक एवं महात्मा परम चेतनानन्द, चेतन योग आश्रम, सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग**

**सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी**

**मुद्रक : टैन प्रिन्ट्स इन्डिया प्रा. लि., रोहद, हरियाण**